शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

'पथिक' काव्य

कवि – श्री रामनरेश त्रिपाठी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

प्रश्न :- 'पथिक' किस प्रकार का काव्य है?

उत्तर :- 'पथिक' एक खण्ड काव्य है। खण्डकाव्य के प्रत्येक सर्ग के प्रारम्भ में प्रकृति का वर्णन किया गया है। यह पुराना नियम है। त्रिपाठी जी ने उस पुरातन नियम की रक्षा की है। इसमें प्रभात और चाँदनी रात का आकर्षक वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त वन, पर्वत, नदी और समुद्रतट इत्यादि का भी वर्णन हुआ है। प्रो० कृष्ण शंकर गुप्त का कहना है कि 'प्रकृति चित्रण' में त्रिपाठी जी ने अपनी ओर से कुछ भी नहीं मिलाया है। जो दृश्य जैसा है, मात्र वैसा ही अंकित कर देना इनकी विशेषता है।

प्रश्न :- कवि ने किस 'वाद' के कवियों का अनुसरण किया है?

उत्तर :- 'छायावादी' कवियों की तरह कवि त्रिपाठी जी ने भी यह स्वीकार किया है कि सारी प्रकृति इसी महाप्राण सत्ता से प्रभावित और परिचालित है। यथा –

उससे ही विमुग्ध हो नभ में चन्द्र विहँस देता है,
वृक्ष विविध पत्तों पुष्पों से तन को सज लेता है।

'पथिक' में एक स्थान पर जहाँ कवि ने धरती के अनमोल विमल प्रभात सामुद्रिक समीकरण के मधुर स्पर्श का मोहक और मादक चित्रण किया है, वहाँ उसने पथिक पत्नी के विषाद युक्त मुखमण्डल का भी मार्मिक चित्रण किया है।

प्रश्न :- कवि ने प्रकृति को किस दृष्टि से देखा है?

उत्तर :- कवि श्री राम नरेश त्रिपाठी ने प्रकृति को बड़े ही स्वच्छन्द और व्यापक दृष्टि से देखा है। कवि को प्रकृति का उग्र रूप स्वीकार नहीं है। इनके काव्य 'पथिक' में कल्पना से अधिक अनुभूति की गहराई है। जहाँ प्राचीन कवियों ने प्रकृति को जड़ रूप में लिया है वहाँ त्रिपाठी जी उसको चेतन स्वरूप में ग्रहण किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कु० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
22/08/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

जयद्रथ-वध - काव्य खण्ड

कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त Date: _____ Page: _____

उस ओर भूरिश्रवा से वीर सात्यकि लड़ रहा;
झंझानिल प्रेरित जलद ज्यों हो जलद से अड़ रहा।
बहु युद्ध करने से प्रथम ही था यदपि सात्यकि थका;
पर देख अर्जुन को निकट उत्साह से वह था छका॥

भावार्थ

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि ने सात्यकि और भूरिश्रवा के बीच हुए युद्ध का विस्तार से वर्णन किया है। कवि कहता है कि कौरवों की ओर से भूरिश्रवा सात्यकि से युद्ध करने लगा। उन दोनों का युद्ध ऐसा लग रहा था मानो आँधी या तूफानी वायु से प्रेरणा पाकर बादल-बादल से ही अड़ रहा हो। इसके साथ ही बहुत अधिक युद्ध करने से पूर्व ही सात्यकि थक गया था किन्तु वह अर्जुन को अपने समीप देखकर दुगने उत्साह से भर गया।

कवि ने प्रस्तुत पद्यांश में भूरिश्रवा और सात्यकि के बीच हुए भीषण युद्ध का वर्णन किया है। दोनों योद्धाओं के युद्ध कौशल को देखकर अन्य सारे वीर हतप्रभ हो गये। वे सभी वीर परस्पर लड़ना छोड़कर इन दोनों के युद्ध देखने लग जाते हैं। इस पद में वीर रस की धारा प्रवाहित हो रही है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ
२५/०४/२०

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
द्वितीय - भाग - 2, पद्य खण्ड

Date ______ Page ______

शीर्षक - "छप्पय"
कवि - नाभादास

उक्ति चौज, अनुप्रास, वरन, अस्थिति, अतिभारी।
वचन प्रीति, निर्वही, अर्थ अद्भुत तुकधारी॥
प्रतिबिंबित दिवि दृष्टि हृदय हरि-लीला भासी।
जनम कर्म गुन रूप सबहि रसना परकासी॥
विमल बुद्धि होत सुकी, जो वह गुन श्रवननि धरै।
सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहि शिरचालन करै॥

भावार्थ

भक्त कवि संत नाभादासजी कहते हैं कि सूरदास की कविता सुनकर कौन ऐसा कवि है जो उनके साथ हामी नहीं भरे। सूरदास की कविता में श्रीकृष्ण की लीला का वर्णन है। उनके जन्म से लेकर स्वर्ग-धाम की लीलाओं का मुक्त गुणगान किया गया है। उनकी कविता में क्या नहीं है। गुण-माधुरी और रूप-माधुरी सब कुछ भरी हुई है। सूरदास की की दृष्टि दिव्य थी। वही दिव्यता उनकी कविताओं में भी प्रतिबिंबित है। गोप-गोपियों के संवाद में अद्भुत प्रीति का निर्वाह दिखाई पड़ती है। शिल्प की दृष्टि से उक्ति-वैचित्र्य, वर्ण्यवैचित्र्य और अनुप्रासों की अनुपम छटा सर्वत्र दिखाई पड़ती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०ड० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ
22/04/20